अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

वर्धमान महोत्सव सम्पन्न कर प्रवर्धमान हुए ज्योतिचरण

-आरोह-अवरोह व संकरे मार्ग पर लगभग बारह किलोमीटर का हुआ विहार

-अहिंसा यात्रा संग आचार्यश्री पहुंचे निलाम्बुर स्थित तेजाशक्ति इंस्टीट्यूट आॅफ टेक्नोलाॅजी फार वुमेन

-धर्म का समाचरण कर अपनी आत्मा के कल्याण का हो प्रयास: आचार्यश्री महाश्रमण

04.02.2019 निलाम्बुर, तिरुपुर (तमिलनाडु): तिरुपुर की धरती को अपने चरणरज से पावन कर, वहां निवासित श्रद्धालुओं के मानस के मैल को अपनी ज्ञानगंगा के प्रवाह से धोकर, तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्ट महोत्सव वर्धमान महोत्सव जैसा सुअवसर प्रदान करने के साथ ही चार दिवसीय प्रवास से कृतार्थ बना जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी अहिंसा यात्रा के साथ सोमवार को कन्यामुण्डी स्थित तिरुपुर बिल्डर्स सेंटर से मंगल प्रस्थान किया।

आज आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में कोयम्बत्तूर के श्रद्धालुओं की विशिष्ट उपस्थिति यह दर्शा रही थी कि अब कोयम्बत्तूर बहुत ज्यादा दूर नहीं है। आज के विहार मार्ग में कहीं आरोह तो कहीं अवरोह की स्थिति थी। मार्ग के दोनों ओर कहीं नारियल के वृक्षों की कतारें थीं तो कहीं केले के वृक्षों की कतारें थीं। कहीं खेत सूखे और खाली पड़े हुए थे कहीं खेतों में मेहनती किसान सब्जी आदि की खेती में जुटे हुए थे। कुछ किलोमीटर विहार के उपरान्त तो ग्रामीण इलाका आरम्भ हो गया। इन्हीं गांवों के बीच होकर गुजरने वाली अहिंसा यात्रा तमिलवासियों के लिए आश्चर्य का विषय बनी हुई थी। आश्चर्य से भरे हुए ग्रामीणों को किसी माध्यम से आचार्यश्री के बारे में जानकारी मिलती तो वे श्रद्धा के प्रणत होकर आचार्यश्री से पावन आशीष भी प्राप्त कर रहे थे। ऐसे मार्ग पर लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री निलाम्बुर स्थित तेजाशक्ति इंस्टीट्यूट आॅफ टेक्नोलाॅजी फाॅर वुमेन परिसर में पधारे। आचार्यश्री के आगमन से आह्लादित इस इंस्टीट्यूट की आॅनर श्रीमती तारालक्ष्मी ने मंगल कलश आदि के साथ आचार्यश्री का भावभीना अभिनन्दन कर आचार्यश्री से पावन आशीष प्राप्त किया।

इंस्टीट्यूट परिसर में आयोजित मंगल प्रवचन में आचार्यश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को तब तक धर्म का समाचरण कर लेना चाहिए जब तक बुढापा पीड़ित न करने लगे। आदमी को धर्म का समाचरण शरीर में व्याधि उत्पन्न होने से पहले-पहले और इन्द्रिय शक्तियों के क्षीण होने से पहले-पहले कर लेना चाहिए। आदमी का शरीर बुढा हो जाए तो भला वह कितना धर्म का समाचरण कर सकता है। रोग ग्रस्त शरीर भी भला कितना धर्म का अनुगमन कर सकता है और जब इन्द्रियों की शक्ति ही क्षीण हो जाए तो धर्म का समाचरण कर पाना असंभव हो जाता है। इसलिए आदमी को बुढापे के पीड़ित करने से पूर्व, शरीर के व्याधिग्रस्त होने से पूर्व और इन्द्रिय शक्ति क्षीण होने से पूर्व धर्म का समाचरण कर लेने का प्रयास करना चाहिए। शरीर को व्याधियों का मंदिर कहा जाता है। किसको कब पता कौन सी बीमारी लग जाए, इसलिए आदमी को स्वस्थ रहते हुए धर्म की साधना के क्षेत्र में गति करने का प्रयास करना चाहिए। आंखों से दिखाई न दे, कानों से सुनाई न दे, शरीर चलने में सक्षम न हो तो आदमी से धर्म की साधना कैसे हो सकती है? इसलिए आदमी को शरीर के ठीक रहते और इन्द्रिय शक्ति सम्पन्नता के समय ही धर्म साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए और अपनी आत्मा के कल्याण का प्रयास करना चाहिए। पाप कर्मों से बचने और धर्माचरण करने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के पश्चात् इंस्टीट्यूट की आॅनर श्रीमती तारालक्ष्मी ने अपनी हर्षाभिव्यक्ति दी तो आचार्यश्री ने उन्हें विशेष मंगलपाठ सुनाया और पावन आशीष भी प्रदान किया।